तिल की खेती

प्रजातियाँ

❖ टाइप-4	❖ टाइप-12
❖ टाइप-13	❖ टाइप-78
❖ शेखर	❖ प्रगति
❖ तरुण	❖ कृष्णा
❖ बी.-63	

खेत की तैयारी

- दोमट भूमि से काली मिट्टी में भी उगाई जाती है
- खेत की पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल तथा बाद में दो-तीन जुताई कल्टीवेटर या देशी हल से करनी चाहिए

बीज की मात्रा एवं बुवाई

- 3-4 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर
- 2.5 ग्राम थीरम या कैप्टान से एक किलोग्राम बीज का शोधन
- जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई का दूसरा पखवारा बुवाई के लिए उपयुक्त
- लाइन से लाइन 30-45 सेंटीमीटर दूरी पर

खाद एवं उर्वरक

- 80-100 कुंतल गोबर की खाद प्रति हेक्टेयर
- नत्रजन 30 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर
- फास्फोरस 15 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर
- पोटाश 15 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर
- गंधक 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर

सिचाई

- तिल वर्षा ऋतु की फसल है, यदि वर्षा न हो तो अवश्यकतनुसार सिंचाई करनी चाहिए
- फसल में 50-60 प्रतिशत फलत होने पर एक सिंचाई करनी चाहिए

खरपतवार नियंत्रण

- पहली निराई-गुड़ाई बुवाई के 15-20 दिन बाद
- दूसरी निराई-गुड़ाई बुवाई के 30-35 दिन बाद

- एलाक्लोर 50 ई.सी. 1.25 लीटर मात्रा 700-800 लीटर पानी में मिलाकर प्रति हेक्टेयर बुवाई के 2-3 दिन में भूमि पर छिड़काव

रोग नियंत्रण

- फिल्लोड़ी
- झुलसा

- फिल्लोड़ी मिथाइल ओडिमेटान 25 ई.सी. एक लीटर 600-800 लीटर पानी में प्रति हेक्टेयर छिड़काव
- झुलसा रोग के नियंत्रण के लिए 3 किलोग्राम कॉपरआक्सीक्लोराइड या 2.5 किलोग्राम मैन्कोजेब 700-800 लीटर पानी में प्रति हेक्टेयर छिड़काव

कीट नियंत्रण

- पत्ती लपेटक
- फली बेधक

रोकथाम

- क्यूनॉलफॉस 25 ई.सी. 1.5 लीटर या मिथाइल पैराथियान 2 प्रतिशत चूर्ण 25 किलोग्राम एक हेक्टेयर की दर से 600-700 पानी में मिलाकर छिड़काव

कटाई एवं उपज

- तिल की पत्तियां पीली पड़ने पर जब गिरने लगे तब समझना चाहिए की फसल पककर तैयार है
- कटाई पेड़ सहित नीचे से करना चाहिए
- उपज 7-8 कुंतल प्रति हेक्टेयर